रामपन

RAMNESS

पार्ट–9

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आह्वाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09813055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से **रामराज्य** जैसी खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

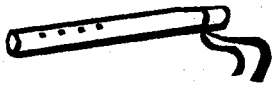

वैबसाईट देखें :
www.ramrajyaahwahan.com

नोट : आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1&B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर, सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद
फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

"मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आ जाएगा और फिर धीरे धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरु करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।"

आज अगर हम देखते हैं तो अधिकांश परिवारों में परिवार के लोगों के बीच दूरियां हो गयी हैं आपसी प्रेम कम हो गया है क्लेश बढ़ गये हैं मनों में गाठें पड़ गयी हैं। अगर हम इस विषय पर रामराज्य के नजरिये से विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि यह एक दूसरे पर अपनी इच्छा लादना अपनी इच्छा पूरी करने के लिए लड़ मरना, दूसरो की इच्छाओं की परवाह न करने का परिणाम है। कहते हैं रिश्ते कच्चे धागों के होते हैं अगर एक बार गांठ पड़ जाऐ तो गांठो को खोलना भारी हो जाता है और आज तो गांठो की परवाह ही नहीं करते हैं कितनी ही पड़ जाऐं। परिवार का हर ताकतवर कमजोरों के मन में खूब गांठे डाल रहा है तथा कमजोर कोशिश कर रहा है कि अगर मैं ताकतवर हो जाऊं तो इसे तो मैं बताऊं। लोग कमजोरों के मन को ठेस पहुंचाने, चोट पहुंचाने उनके मन को कुचलने की बजाए उन कमजोरों के मन को जीतने का, उन्हें खुश करने का प्रयास करते तो परिवारो का नजारा कुछ और ही होता। उनमें रामराज्य होता सभी एक दूसरे पर जान छिड़कते सभी एक दूसरे को खुश रखते चारों तरफ प्रेमपूर्ण माहौल होता तथा सब अपने अपने परिवार को देखकर खुश होते तथा उस पर गर्व करते।

रामराज्य में बस सिर्फ यही फर्क था कि राजा ताकतवर था एवं अपनी प्रजा पर अपनी ताकत का प्रयोग नहीं करता था। वह अपनी ताकत का प्रयोग अपनी प्रजा के मन जीतने के लिए, अपनी प्रजा को खुश करने के

लिए, अपनी प्रजा की तरक्की के लिए, अपनी प्रजा के दुख दूर करने के लिए, अपनी प्रजा को दुश्मनों से छुटकारा दिलाने के लिए ही करता था इस ही वजह से वहां प्रेम था, सभ्यता थी, संस्कार थे, अनुशासन था, मनों का मेल था सभी अपने राजा की ताकत बढ़ाने में लगे रहते थे क्योंकि इस ही मे उनका सच्चा हित था।

आज क्या गड़बड़ हो गयी है कि जब तक माँ-बाप ताकतवर हैं वे बच्चों के मनों को खूब ठेस पहुंचा रहे हैं अगर वे बच्चों को सिर्फ बच्चों के भले के लिए कुछ कहते हैं तो चल भी जाता मगर आज तो माँ-बाप अपने बच्चों को इस वजह से डांटत-डपटते हैं कि बच्चों से माँ-बापो के जीवन में कोई दखलंदाजी न हो, माँ-बाप की मौज मस्ती में माँ-बाप के सुख चैन में कोई बाधा न पड़े बच्चों को चाहे कितनी ही परेशानी क्यों न पड़ जाए। इसका परिणाम है कि जब माँ-बाप बूढ़े हो जाते हैं उनकी ताकत कमजोर पड़ जाती है तथा बच्चे ताकतवर हो जाते हैं तो वे भी बूढ़े माँ-बाप के साथ वही करते हैं जो बचपन में उनके साथ होता था बच्चे अपने बूढ़े माँ-बाप को झिड़ककर चुप करा देते हैं तथा उनके मन का ख्याल नहीं रखते हैं। यह आज के समाज का बुरा प्रतिबिंब है जो ना समझी से हो गया हैं। रिश्तों की अहमियत को न समझने से हो गया है मनों की परवाह न करने की वजह से हो गया है दूसरो की लिहाज न करने से हो गया है।

मैं मानता हूँ मनों को जीतना अत्यधिक कठिन है सभी के मनों को खुश रखना कठिन है, सभी की खुशी के बीच सन्तुलन रखना कठिन है। सभी में हम खुद भी शामिल हैं मगर सिर्फ ऐसे ही जैसे और सब शामिल हैं। लेकिन यह सत्य है तथा अत्यन्त आवश्यक है कि हमारा प्रयास सिर्फ और सिर्फ यही होना चाहिए तथा जब हम ऐसा प्रयास निरन्तर करेगे यही कोशिश करेंगे तो हमें इसमें सन्तुलन बनाना प्यारा सा सन्तुलन बनाना आ ही जाएगा तथा हमारा परिवार या हमारा राज्य रामराज्य जैसा सुखी समृद्ध एंव खुशहाल हो जाएगा।

जय श्री राम

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आपको एक रहस्य की बात बताता हूं कि जो मनुष्य रामायण पढ़ता है रामचरित्रों का गुणगान करता है राम कथा करता है ज्ञानी कैसे हो जाता है सन्त कैसे हो जाता है महात्मा कैसे हो जाता है। रहस्य है कि माता सरस्वती को रामकथा (रामायण) बहुत पसन्द है उनको यह अत्यन्त प्रिय है अतः जब यह होती है जहां यह होती है माता सरस्वती इसको सुनने ब्रहालोक अपने लोक को छोड़कर भागी चली आती हैं और जहां यह होती है इस स्थान को अपनी उपस्थिति से पवित्र कर देती हैं जो यह पढ़ता है या सुनाता है उस पर कृपा करती हैं तथा उसकी बुद्धि को पवित्र कर देती

हैं। स्वाभाविक है माता सरस्वती जो ज्ञान एवं विज्ञान की देवी हैं अगर किसी पर कृपा कर दें तो वह ज्ञानी एवं विज्ञानी तो हो ही जाएगा। बस यही है रहस्य कि रामायण पढ़ने से, सुनाने से, समझाने से, इन्सान क्यों ज्ञानी, सन्त एवं यशवान हो जाता है। हे माँ आपकी जय हो जैसे निर्मल जैसी प्यारी बुद्धि आपकी है काश ऐसी भोली बुद्धि हमारी भी ऐसी ही पवित्र बुद्धि हमारी भी हो जाए।

जय माँ सरस्वती आपकी जय हो।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

सच और झूठ एक महत्वपूर्ण विषय एक महत्वपूर्ण सवाल। दोनों ही जीवन का अभिन्न अंग हैं। सच्चा जीवन सच में जीना एक वास्तविक सुख है मगर यह भी सत्य है कि हर सच के दो पहलू हैं हर सच से एक को सुख पहुंचता है तथा दूसरे पक्ष को दुख पहुंचता है या एक को लाभ होता है तो दूसरे को हानि होती है अब क्या सही है सच या झूठ। अब जब हम इस सवाल पर विचार करते हैं तो हकीकत तो यही है कि सच्चा तो सच ही है हमेशा कायम रहने वाला सच तो सत्य ही है हकीकत से रुबरु कराने वाला तो सच ही है झूठ के कारण आपके जीवन मे आ सकने वाले क्लेशों एवं मुसीबतों से हमेशा के लिए बचा लेने वाला तो सच ही है आपको सुख-दुख, लाभ-हानि, सन्तोष-असन्तोष में समभाव की तरफ ले जाने वाला तो सच ही है

आपको अपने भगवान का दोषी होने से बचाने वाला अर्थात अपने साथ भगवान का बल पहुंचाने वाला तो सच ही है। यही है वजह कि सच को इतना ज्यादा मान दिया जाता है तथा हमेशा इस राह पर रहने की सलाह दी जाती है। दूसरी तरफ भगवान तो ऐसे हैं कि बस कोई भी दुखी होता है तो दुखी हो जाते हैं वे तो चाहते ही नहीं कि कोई भी दुखी हो वे तो हर किसी को ही सुखी देखना चाहते हैं अतः वह तो यही चाहते हैं कि सभी सुखी रहें, खुश रहें, खिलाखिलाते रहें, आपस में किसी में नफरत न हो, सभी प्रेम से रहें, सौहाद्रता पूर्ण वातावरण में रहें, किसी को किसी से कोई शिकायत न हो सर्वाधिक सम्भव। उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता आप सच में जियो चाहे झूठ में वे तो बस आप सबके सुख से मतलब रखते हैं बस उनके लिए तो सब समान हैं वह नहीं चाहते आप तो सुखी हो जाऐं मगर दूसरे दुखी हो जाऐं, या आप तो दुखी हो जाऐं मगर दूसरे सुखी हो जाएं, ऐसा न हो आप आज तो सुखी हो जायें मगर कल पछताना पड़े, कल रोना पड़े। वह जानते हैं कि सच की राह मे दीर्धकालीन सुख रहता है ज्यादातर, सभी को सुख रहता है इसीलिए सच पर एवं सच की राह पर चलने की सलाह दी जाती है। बस यही है जो हर समय हर परिस्थिति में हर किसी के लिए बदलता रहता है यह तो हमें अपने विवेक को विकसित करना होता है ताकि हम तय कर

सकें क्या सही है क्या गलत। हमारी जगह अगर भगवान होते तो क्या कर रहे होते। हमारे से किसी के मन (भगवान का अंश) को दुख तो न हो जाएगा कहीं बाद मे पछताना तो नहीं पड़ेगा।

मुझे साफ दिखायी देता है कि जब इन्सान का मन सौहार्द्रपूर्ण हो जाएगा, जब इन्सान का मन भगवानी हो जाएगा, जब इन्सान का भाव समभाव हो जाएगा जब वह अपने मे एवं दूसरो मे फर्क न करना जान जाएगा, जब उसका मन भगवान के मन जैसा निर्मल पवित्र एवं क्षमाशील एवं ज्ञानयुक्त हो जाएगा, तब सब कुछ स्वयं ही तय हो जाएगा तथा यही सच होगा, यही सच की राह होगी एवं खिलखिलाहट, प्रसन्नता, दीर्घकालीन सफलता, सौहार्द्रता प्रदान कर देगा।

बारीकी से बार-बार पढ़ें एवं अपने में उतारें सब समझ में आ जाएगा दूध का दूध एवं पानी का पानी हो जाएगा एवं बस यही तो रामराज्य है आप देखें इसको यहीं सच्चिदानंद हैं भगवान मस्त हो जाऐंगे दुनिया नाचने लगेगी यही तो जन्हत है यही तो स्वर्ग है।

भगवान आप सबको पुकार रहे हैं आपकी करनी ऐसी हो गयी है इसे देखने के लिए बैचेन हो रहे हैं कर दो रोशन नाम अपने भगवान का।

जय श्री राम

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

एक आदर्श मुखिया के गुण :

1. लोग उसके राज्य मे सुरक्षा का एहसास कर पाऐं
   a शरीर की सुरक्षा
   b आत्मसम्मान की सुरक्षा
   c मनोरथो की सुरक्षा
2. राजा ऐसी व्यवस्था बना दे कि प्रजा का समयानुसार उचित शिक्षा मार्गदर्शन होता रहे।
3. राजा का काम है ऐसी व्यवस्था बना देना कि प्रजा मे Sports Sprit खेल भावना बनी रहे अच्छा खिलाड़ी होने पर उचित इनाम मिल सके।
4. राजा का काम है ऐसी व्यवस्था बनाना की राजा स्वयं बलवान, स्वस्थ, हसंमुख, सम्मानीय एवं प्रेरणा से भरपूर रहे।
5. राजा का काम है स्वस्थ मनोरंजनों की व्यवस्था बनाना ताकि प्रजा का उचित मनोरंजन होता रहे।
6. राजा का काम है ऐसी व्यवस्था बनाना कि राज्य के दुर्जनों, दुष्कर्मों का उचित दण्ड स्वतः ही मिल जाऐ देना न पड़े।
7. राजा का काम प्रजा की योग्यता के आधार पर अधिकार एवं कर्तव्यों का निर्धारण करता रहे ताकि राज्य का चहुंमुखी विकास हो।
8. राजा का कर्तव्य है प्रजा को जरुरी आवश्यकताओं अर्थात रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध कराऐ।

9. राजा का काम है ऐसी व्यवस्था बनाना कि प्रजा के जीवन मे नित नित नयापन आऐ ताकि प्रजा मे उमंग उत्साह एवं उल्लास बना रहे।
10. मुखिया अपने राज्य को भगवान का राज्य माने तथा स्वयं को अपने राज्य या परिवार का सिर्फ care Taker देखभाल कर्ता माने।
11. वह अपने परिवार मे वही नीतियां व नियम बनावे जैसी एक भगवान के राज्य मे या रामराज्य मे होती हैं क्योंकि यह भगवान का राज्य है मुखिया का नहीं। मुखिया अपनी अपनी न चलावे ध्यान रक्खे वह भगवान के सिर्फ प्रतिनिधि के रुप में काम कर रहा है।

एक आदर्श घर की मैनेजर के लक्षण

1. घर के नियमों एवं परम्पराओं का सम्मान करे तथा उनमें सुन्दरता बनवाने का प्रयत्न करें।
2. घर के सदस्यों, सभी सदस्यों का ऐसे लालन-पालन करें जैसे एक प्यारी सी मां अपने बच्चों का करती है अर्थात उंगली पकड़कर चलाना, उसके प्रति क्षमाशील रहना, प्यार से डांट-फटकार करना, उनको हंसाना, रुठना, मनाना आदि।
3. घर के खान-पान की व्यवस्था ऐसी करे जिससे घर के सदस्यों का सच्चा हित हो, उनके शरीर स्वस्थ बनें, बलपूर्ण बनें, चुस्त बनें जिसमें उनके मन भी स्वस्थ रहें।

4. घर मे आने-जाने वाले मेहमान, सन्त, महात्मा, बजुर्ग, रिश्तेदार, बच्चों आदि का उचित स्वागत सत्कार करे एवं करावे ताकि उन सबके बीच घर परिवार का, परिवार के सदस्यों का, परिवार के मुखिया मान बढ़े घर पर और सबका प्रेम, प्यार, आर्शीवाद, कृपा बढ़े।
5. अपने को स्वस्थ खुश एवं प्रसन्न रक्खे उसके लिए जो जरुरते हैं उसकी व्यवस्था बनाऐ। अपने घर के सदस्यों एवं मुखिया का समय समय पर उचित मार्गदर्शन करे ताकि वह उन सबको स्वस्थ एवं खुश रखने में सफल हो सके।
6. घर के वातावरण में खान-पान में पवित्रता बनाऐ क्योंकि यह घर के सदस्यों के आचार-विचार, मन को पवित्र एवं निर्मल बनाती है तथा घर को एवं घर के सदस्यों को भगवान की कृपा दिलाती है क्योंकि—पवित्र खान-पान भगवान को खुश रखता है अन्यथा वे रहते तो हैं मगर मुंह बिसान कर, वे मन से दुखी मन से रहते है।
7. घर के सदस्यों में स्वस्थ खेल भावना का विकास करे जिससे घर के सदस्यों का चहुमुंखी विकास हो। मैनेजर का फर्ज है कि छोटी-मोटी बातों पर नाराज न होवे समझदारी से सुलझावे क्योंकि वह तो मैनेजर है उस पर तो तमाम ऊँच-नीच, अच्छी-बुरी बातें मैनेज करने के लिए आऐंगी ही वह तो बस भगवान का ध्यान करके सब कुछ समझदारी

से मैनेज करे एवं एक अच्छे तथा सदपरिणाम पर उसे पहुंचावे ताकि भगवान का मान बढ़े एवं इसकी प्रशंसा हो क्योकि अन्त भला तो सब भला एवं अन्त बुरा तो सब बुरा।

8. पत्नी मैनेजर का फर्ज है मुखिया को अच्छे-अच्छे पाठ पढ़ावे, अच्छी बातें बतावे एवं बुरी बातों को छिपावे ताकि मुखिया के द्वारा अच्छे-अच्छे काम हों तथा वह बुरी बातों से बुराईयों से बचे।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

अब लोग 'रामराज्य आहवाहन मिशन' से प्रभावित हैं तथा वे भी चाहते हैं कि हमारे राज्य में भी रामराज्य हो वे सवाल करते हैं कि हमें क्या करना है कि हमारे राज्य मे रामराज्य हो जाऐ।

सीधा सा जवाब है सीधा सा मार्ग सुनें मन की आखों से देखें व समझें जो निम्नलिखित है:—

1. राजा को स्वयं को अपने राज्य एवं अपनी प्रजा तथा कर्मचारियो का संरक्षक, गाईड, कोच, शिक्षक, मार्ग दर्शक समझना होगा न कि उसका उन सबका मालिक। मालिक तो उन सबका भगवान है श्री राम हैं। खुद को सिर्फ उन सबका ध्यान रखने के लिए सिर्फ भगवान का प्रतिनिधि समझना होगा इससे ज्यादा कुछ और नहीं।

   हाँ यह निश्चित है जब कोई राजा ऐसा व्यवहार करता है तो सभी लोग उसको अपना मालिक, अपना भगवान, अपना अन्नदाता मानने लग जाते

हैं और यह जो भाव है यही सच्चा राजापन है लोगों के मन तुम्हें अपना राजा मानने लगें यही तो सच्चा राज्य है बस ऐसा करना है।

2. अपनी प्रजा को अपने कर्मचारियो को अपनी प्रजा को अच्छे-अच्छे संस्कार, सर्वोत्तम श्री राम जैसे संस्कार देने होते हैं बस ये सब संस्कार देने का यथा सम्भव प्रयास करना है, लगातार प्रयास करना है, अथक प्रयास करना, अगर सकल ताड़ना की जरुरत है तो उसका भी प्रयोग करना (सकल ताड़ना मतलब ऐसी ताड़ना जिससे उनका कल अच्छा बने हल्की फुलकी ताड़ना ऐसे कि उन लोगों के मन न कुचल जाऐं) क्योंकि अपना रिश्ता, मन का रिश्ता सुन्दर बनाना है उसमें गांठ नहीं पड़नी चाहिऐ। क्योंकि रिश्ते कच्चे धागों के होते हैं धीमे-धीमे इन सबमें एवं तुम खुद राजा में राम के संस्कार आ ही जाऐंगे गहरा ही जाऐंगे क्योंकि वही सर्वोत्तम है, वही सत्य है अतः बस देर सबेर सिर्फ वही रह जाएगा बाकी सब विलीन हो जाएगा तथा यही रामराज्य है।

3. चूंकि राजा भगवान का प्रतिनिधि है श्री राम का प्रतिनिधि है उसे उनकी ही नीतियां इस राज्य मे चलानी होंगी। उस ही भाव की नीतियां बनानी होंगी। अपनी नहीं या कोई और नहीं एवं उन ही नीति एवं नियमों का पालन करना एवं कराना होगा रामराज्य निश्चित रुप से बन ही जाएगा तय है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आज अलका ने 16/12/2010 स्वप्न देखा कि आसमान में जो अंधेरी रात है बादलों में जगमगाते हुए भगवान जा रहे हैं शंकर जी जा रहे हैं कृष्ण भगवान जा रहे हैं श्री गणेश भगवान जा रहे हैं वह उनसे कहती है कि आप सब भगवान तो ठीक हैं मगर हमारे भगवान कौन से हैं हमें यह तो बता दो। तो तभी सतरंगी प्रकाश पैदा होता है और उसमें से भगवान सच्चिदानंद खादी के कुर्ते पाजामे मे प्रकट होते हैं तथा आसमान से उतर आते हैं एवं महात्मा श्री भजनानन्द के रुप में ही कहते हैं मैं तुम्हारा भगवान हूँ तथा अलका बड़ी खुश होती है वे कहते हैं मैं यही तो तुम्हारे पास ही तो रहता हूँ तथा दोनों खुशी-खुशी मेरे पास आने लगते हैं तथा खुशी से दोनों नाच गा रहे हैं और गा रहे हैं :–

"आप हमारे भगवान हो हमारे प्यारे से भगवान हो हम तुम्हारे भगवान हैं हम तुम्हारे प्यारे से भगवान हैं।" वे मेरे पास आते हैं मैं अपनी पूजाओं में, अपने मकसद को पूरा करने मे लगा हूँ, भगवान कह रहे हैं इसे डिस्र्टब न करो आज इसकी पूजाऐं पूरी हो गयी हैं आज मैं इसका काम पूरा करुंगा रिक्त स्थान को भरुंगा ऐसा है भगवान श्री सच्चिदानंद का प्रेम जो अपने भक्तों के जीवन मे घुल रहा है तथा भक्तों का जीवन आनन्दमय हो रहा है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आज मेरी एक भक्त (पेशे से वकील) से चर्चा हुई मैं बोला कि मुखिया (पति) अपने बच्चे को जितना प्यार करता है उसकी हर अच्छी बुरी जायज एवं नाजायज हर बात को बर्दाश्त करता है तथा बातों में जिद में उसको ही जिताकर खुश होता है औरों के साथ भी कोशिश करता है कि सब उसका ख्याल रखें उसका मन न दुखाऐं जैसा बच्चा चाह रहा है वैसा ही करें जिसका यह परिणाम होता है कि बच्चे का चहुंमुखी एंव खुला विकास होता है बिना किसी प्रतिरोध के। जब उसको (पति) यह सब आता है तो वह यह सब पत्नी के साथ करे तो शायद उसका घर अत्यन्त प्यारा सा सिर्फ खुशियों भरा हो जाएगा क्योंकि घर वाली खुश तो सारा घर खुश हो जाएगा।

वह बताता है कि फर्क है बच्चे के साथ तो खून का रिश्ता है जबकि पत्नी के साथ ऐसा नहीं है इस वजह से ऐसा नहीं हो पाता है मुझको आश्चर्य हुआ कि ऐसा भी जवाब हो सकता है मगर उसकी बात भी सत्य है वह कहता है कि जहां खून का रिश्ता होता है वहां तो बचपन से इसकी आदत पड़ी रहती है मगर जहां खून का रिश्ता नहीं होता है वहां इसकी निभाने की दूसरे के प्रति समर्पण की आदत नहीं होती है जबकि खून के रिश्ते में शुरु से आदत होती है। वह बताता है कि आप इस व्यवहार को देखें कि एक मां का व्यवहार अपनी बेटी के साथ एवं अपनी बहू के साथ, माँ अपनी बेटी के लिए तो कहेगी कि कोई तुझे कुछ कहके तो देखे

जबकि बहु से कहती है तेरे माँ-बाप ने तुझे कुछ सिखाया है या नहीं।

दूसरी तरफ एक पत्नी का व्यवहार अपनी माँ के साथ एवं अपनी सास के साथ भिन्न-भिन्न होता है माँ का तो कुछ भी कहा हुआ उसे बुरा नहीं लगता जबकि सास का इतना कहना भी बुरा लगता है कि बेटा उठ जाओ देर हो गयी है आदि।

अर्थात यही है फर्क खून के रिश्ते का तथा उस रिश्ते का जो खून का रिश्ता नहीं है। बड़ा आश्चर्यपूर्ण है मगर है तो हकीकत। काश! हमने भगवान के रिश्ते को आधार माना होता और किसी भी रिश्ते की जगह कि सारी दुनिया भगवान की है सच में भगवान हमारे माता-पिता है, भगवान का दिया हुआ जीवन हमें जीना है, हमें अपने एवं औरो का ऐसे ध्यान रखना होता है जैसे भगवान का, तो शायद कोई परेशानी होती ही नहीं यह सिर्फ अभ्यास का मुद्दा है आदत की बात है इसके अलावा कुछ और नहीं।

शास्त्रों में लिखा है कि शादी स्त्री का पुर्नजन्म होता है तो ऐसा ही क्यों नहीं माना जाता। क्योंकि जन्म के रिश्ते को खून का रिश्ता माना जा रहा है तो शादी भी तो स्त्री का पुर्नजन्म ही है जैसे एक बच्चे के जन्म होने के पश्चात चाहे माँ-बाप अच्छे हैं या बुरे हैं देवता हैं या राक्षस। इस ही तरह बच्चा चाहें अच्छा है या बुरा, स्वस्थ है या बीमार, प्यारा सा है या चिड़चिड़ा है, उसे

त्यागने का सोचा ही नहीं जाता तो ऐसा पति एवं पत्नी में क्यों नहीं सोचा जाता जबकि यहां भी ऐसा ही होना चाहिए एवं ऐसी बात नहीं यह भी सम्भव है। क्योंकि यह निश्चित है कि निभता वही है जो निभाया जाता है चूंकि यहां अलग हो जाने का विकल्प माना जाता है इस वजह से इन्सान उस विकल्प की तरफ बार-बार सोचता रहता है एवं ऐसे तलाक हो जाता है। काश! यह विकल्प होता ही नहीं या इस विकल्प को महसूस किया ही नहीं जाता तथा सिर्फ यह माना जाता कि यह पत्नी हमारे परिवार में हमारे घर में पैदा हो गयी है तो इस समाज का रुप प्यारा सा धीमे धीमे से हो ही जाता।

काश पति को एवं पत्नी को ऐसा लगता परिवार को ऐसा लगता कि अब तो कुछ हो ही नहीं सकता क्योंकि अब तो भगवान ने पैदा कर दिया है तो सब निभ जाया करता तथा धीमे-धीमे प्यार पनप जाया करता एक दूसरे की जीवन मे जगह बन जाया करती यही हकीकत है। भगवान जब तुम्हारी बड़े होने पर परीक्षा लेने लगता है तो आप हार जाते हैं बच्चे का जन्म बच्चे को तो सभी पाल लेते हैं क्योंकि वह तो कुछ कह ही नहीं सकता, बेचारा है, निर्बल है उसे चाहें आप प्यार कर लो, चाहे पीट लो, डाँट लो, चाहे पुचकार लो मगर परीक्षा तो तब है जब उसे पालकर दिखाओ जिसे बोलना आता है, एतराज करना आता है आदि।

मुझे लगता है एवं शत-प्रतिशत लगता है कि आपका परिवार प्रेम, प्यार, सौहार्द्रता से परिपूर्ण हो जाएगा

क्योंकि यह भगवान का पैदा किया गया रिश्ता है भगवान इस रिश्ते मे बसते है।

लड़ाई वहीं होती है जब हमें लड़ना आता है छोड़ हम तभी देते हैं क्योंकि जब हमें छोड़ देना आता है काश हमे लड़ना आता ही नहीं होता काश हमे पति-पत्नी के रिश्ते में यह पता ही नहीं होता कि इसे छोड़ा भी जा सकता है तो कितना बढ़िया होता कहीं लड़ाईया ही नहीं होतीं। कहीं कभी भी कोई परिवार ही नहीं बिगड़ता सब कुछ निभ ही जाता।

यही है कारण जो कहा जाता है कि बुरी बातों की, बुरी चीजों की तो जानकारी ही नहीं होनी चाहिए उनकी तरफ से अज्ञानता ही हो तो बढ़िया है।

अब इससे आगे का पहलू उपर लिखित तो सिर्फ स्त्री के पक्ष का पहलू हुआ जब मैने इसे एक और भक्त को पढ़ाया तो आगे देखें वो कहते हैं कि जन्म-पुर्नजन्म मगर बच्चा जो जन्म लेता है उसे तो अपना पुराना जन्म याद नहीं होता है तथा बस वह पूर्ण रुप से सिर्फ इस जन्म से ही मतलब रखता है। मगर पत्नी नया जन्म तो लेती है मगर पुराना जन्म नहीं भूलती है बल्कि बार-बार पुराने जन्म के सम्बन्धों में ही जीना चाहती है तो यह विषय थोड़ा कठिन है अतः पत्नियों के लिए भी यही सलाह है कि जब यह नया जन्म है, शादी एक नया जन्म है तो उसे भी अपना लगाव नये जन्म से ज्यादा तथा पुराने जन्म की यादों को अपने नये जन्म पर हावी नहीं होने देना चाहिए बस इस ही प्रकार यहां पर दोनों के बीच तारतम्य बैठ पाएगा एवं

बैठ ही जाएगा। दोनों का ही फर्ज है दोनों की ही जरुरत है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

भज ले राम भज ले राम जय मां दुर्गा सीताराम।
सीताराम राम जय मां दुर्गा, जय मां दुर्गा सीताराम।।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

राम रमा जाओ तुम हममें हममें राम रमा जाओ,
कहां छुपे हो राम हमारे राम यहां पर आ जाओ।
हम बैठे हैं राह में तुमरी राम हमें न बिसराओ।
राम रमा जाओ तुम हममें हममें राम रमा जाओ।

अपनाओ प्रभु राम हमें भी हमको भी प्रभु राम बनाओ।
शरण तिहारी राम हमारे हमको भी प्रभु अपनाओ।
अपना दास बना लो हम को हमें भी राम भक्त कहलवाओ।
राम रमा जाओ तुम हममें हममें राम रमा जाओ।

राम सिखा दो राम रे हमको राम रे हमके राम सिखाओ,
राम बना दो हमको भी प्रभु रामपन फैला जाओ।
राम शरण में हम सब तुमरी शरणागत पे प्रेम दिखाओ।
दुनिया चाहती है प्रभु तुमको राम प्रभु मोरे आ जाओ।
राम रमा जाओ तुम हममें हममें राम रमा जाओ।

शरण तिहारी है प्रभु तेरे राम हमें भी अपनाओ।
प्रेम के भूखे हैं हम तेरे राम हमें भी गले लगाओ।
शरण तिहारी हैं प्रभु तेरे, शरणागत पर प्रेम दिखाओ।
हम भी चाहते हैं राम होना हमको भी प्रभुराम बनाओ
राम रमा जाओ तुम हममें हममें राम रमा जाओ।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आओ हम समझें कि एक इन्सान कैसे भगवान बन सकता है या एक इन्सान कैसे भगवान ही है आओ देखें। हम सभी जानते हैं कि हम हर किसी में 'मन' है अर्थात 'आत्मा' है। आत्मा क्या है बस परमात्मा का एक अंश अर्थात 'परमात्मा' क्या है वह है एक परम आत्मा यानि कि आत्माओं का एक समुद्र जिसमें से आत्मा आती रहती है तथा जाती रहती है एवं कुल मिलाकर कहा जा सकता है एक आत्माओं की 'α' (infinity) α का सिद्धान्त है कि α का अंश भी α ही होता है अर्थात परमात्मा का हर अंश अर्थात हर आत्मा भी परमात्मा ही है या हो सकती है। जितनी भी आत्माऐं हैं सब परमात्मा में से ही आती हैं या परमात्मा में जाती हैं अर्थात जितनी भी आत्माओं का अपना अनुभव है वह सब परमात्मा के पास उपलब्ध है। जो आत्मा परमात्मा के जिस पहलू का साधन करने लगती है परमात्मा का वह अनुभव परमात्मा की वही शक्ति उस आत्मा की तरफ बहने लगती है। ये सारी आत्माऐं हमेशा सतत् परमात्मा से जुड़ी होती हैं तथा यह आत्मा, परमात्मा, आत्मा का परमात्मा से जुड़ा होना यह कुछ भी इस शरीर की आँखों से दिखायी नहीं देता मगर सभी जानते हैं यह हकीकत है।

अतः जैसे समुद्र से हजारों नदियां, हजारों बादल जुड़े रहते हैं पानी का बहाव कभी उस नदी में ज्यादा कभी उन बादलों में ज्यादा, कभी झरनों मे ज्यादा होता रहता है। समुद्र से कोई नदी निकालकर, कोई नहर

निकालकर जहाँ भी समुद्र जैसी गहराई बनाई जाएगी वहीं समुद्र सम्भव है बस बनाने पर है यहाँ गहरा हो जाएगा तो यहीं समुद्र। अतः ठीक इस ही प्रकार ये सब आत्माऐं हैं जो भी आत्मा परमात्मा का साधन करेगी वही परमात्मा हो जाएगी। जिस आत्मा को भी परमात्मा बनाने का प्रयास किया जाएगा वही परमात्मा हो जाएगी तथा उसमे परमात्मा की वही सब शक्तियाँ धीमे-धीमे आने लग जाऐंगी तथा एक सम्पूर्ण आत्मा परिपूर्ण आत्मा परमात्मा की तरफ अग्रसर हो जाएगी। जैसे-जैसे आत्मा गहरी होती जाएगी वैसे वैसे परमात्मा का प्रभाव उसमें आता चला जाएगा आओ आगे बढ़ें तथा एक परमात्मा का सुख प्राप्त करें। हर आत्मा को परमात्मा में तब्दील करें एवं यही बस जीवन का आनन्द है, स्वर्ग है, रामराज्य है एवं श्री सच्चिदानंद हैं आप अपने को परमात्मा से अलग न समझें आप तो हमेशा ही परमात्मा से जुडे हैं।

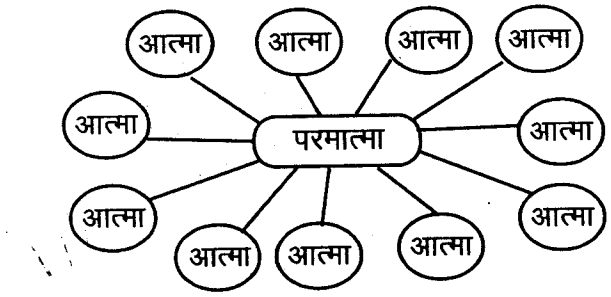

अवसरवादित V/S वाजिबपन (Fairness)

आज के समय में अगर देखा जाए तो भारत में भारत की जनता को जो संस्कार मिल रहा है वह है 'अवसरवादिता' शुरु से ही बच्चा जो देख रहा है अपने घर से, अपने माँ बाप से, स्कूलों से, समाज से, नेताओं से, आदि सभी बस अवसर की तलाश में रहते हैं तथा जैसे ही मौका लगता है अपना घर भर लेते हैं उन्हें इसकी परवाह है नहीं क्या वाजिब है तथा क्या वाजिब नहीं है उनके मन मे ही नहीं आता कि उन्हे इसका भी अर्थात् का भी वाजिबपन ध्यान रखना है।

हर इन्सान उतना वाजिब रहता है जितना वाजिब रहे बिना रहा ही नहीं जा सकता और वह उतना वाजिब रह ही रहा है जितना वाजिब रहना उसकी मजबूरी है अर्थात कहा जा सकता वाजिबपन का दिखावा उस दिखावे को कायम रखने के लिए जितना वाजिब रहना जरुरी है।

अब यह उसका दोष भी नहीं है क्योंकि वाजिबपन सिखाया ही नहीं जा रहा। सीखता तो आदमी बड़ों से ही है जब वे ही वाजिब नहीं है तो वह कहाँ से सीखे एवं क्यों सीखे संस्कारो में ही नहीं है, उनमें तो बस है अवसरवादिता, मौका लगा एवं हाथ मार दिया, इस ही की प्रतियोगिता, इस कुशलता की ही प्रतियोगिता है, कौन कितना बड़ा हाथ मार सकता है। सामान्य भाषा मे ठगी (Toutness) बस यही है काश हमने अपने बच्चों

को संस्कार दिये होते कि वे वाजिब रहते अपनी तरफ से ही कोई उन्हें वाजिब रहने के लिए मजबूर नहीं करता वह तो स्वयं ही वाजिब रहते, अपनी ही तरफ से, अपनी खुद की ही तरफ से तो यह सब न होता, यहाँ घोटाले नहीं होते यहाँ लोग अपनी तेज बुद्धि का प्रयोग घोटाले करने मे नहीं लगाते। चारों तरफ खुशहाली होती उनके भी जीवन में तथा औरों के भी जीवन में। घोटाले करने वालों के जीवन भी तो दुखी हो जाते हैं आत्मग्लानि से भर जाते हैं तथा सच्चे सुखों से वे भी तथा उनके परिवार भी, जाने कितनों के परिवार भी वंचित हो जाते है।

यह गलती है उचित संस्कार न देने की हमारा फर्ज है हम अपने बच्चों के साथ अपने सेवकों के साथ अपने ग्राहकों के साथ वाजिब रहें ताकि वाजिबपन का संस्कार पले अवसर वादिता का नहीं। क्योंकि यह तो ठगी विद्या है विद्या नहीं है ठगी विद्या को विद्या न समझें। जब आप राम को अपने में उतारने लगेंगे तो यह सब खुद ब खुद ठीक हो जाएगा। राम को समझें रामपन को समझें आपके संस्कार खुद ब खुद सुन्दर हो जाऐंगे एवं यहाँ रामराज्य हो जाएगा। तथा यह भी निश्चित है कि सब खुश, समृद्ध एवं खुशहाल भी हो जाऐंगे निश्चित है निश्चित।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

'रामराज्य आहवाहन मिशन' जो हर इन्सान को राम भगवान बनाना चाहता है जो चाहता है कि हर कोई राम जैसा हो जाए, भगवान जैसा हो जाए, ताकि उनका जीने का तरीका, राज्य चलाने का तरीका, व्यवहार करने का तरीका, भगवान श्री राम के जैसा सुन्दर हो ताकि इस धरती पर रामराज्य बन जाऐ, स्वर्ग बन जाए, जन्नत बन जाए। यही है जीवन का सर्वोत्तम रुप, दुनिया का सर्वोत्तम रुप।

यहाँ पर जब मिशन ने विचार किया तो पाया तीनों भगवान अर्थात भगवान श्री राम, भगवान श्री कृष्ण एवं भगवान शंकर तीनों मिलकर आपस में सम्पूर्ण हैं कोई सा भी युग हो हर इन्सान इन तीनों में से ही किसी न किसी तरह का है किसी का स्वभाव गम्भीर अर्थात श्री राम जैसा, किसी का स्वभाव चंचल अर्थात श्री कृष्ण जैसा हंसी मजाक व छेड़छाड़ वाला एवं किसी का स्वभाव विरक्त एकान्त प्रिय अर्थात श्री शिव जैसा है।

बस जिसको जैसा पसन्द है वह अपनी पसन्द के भगवान को अपना आदर्श बना ले या उसको जब जैसे स्वभाव का मन है वह उस समय उस स्वभाव वाले भगवान को ही अपना आदर्श बना ले वह अपने जीवन को बड़ी आसानी से भगवान की तरह जी पाएगा।

अर्थात तीनो भगवानों राम, कृष्ण व शंकर का स्वभाव समस्त जगत को समस्त दुनिया को कवर कर ही लेता

है एवं कोई भी इन्सान ऐसा नहीं है जो भगवान के भाव मे न जी सके सब ही जी सकते हैं।

श्री राम के स्वभाव को अपनाकर गम्भीर लोग आदर्श पुरुष बन सकते हैं। तथा शिव के स्वभाव को अपनाकर विरक्त स्वभाव के लोग, एकान्त प्रिय स्वभाव के लोग अपने को आदर्श पुरुष बना सकते है या सभी लोग अपनी अपनी आवश्यकतानुसार अपनी अपनी इच्छानुसार अपनी पसन्द के अनुसार श्री राम, श्री कृष्ण या श्री शिव के स्वभाव को अपनाकर अपने को सुखी, आदर्श एवं समृद्ध बना सकते हैं। इस प्रकार यहीं इस दुनिया में रामराज्य, स्वर्ग एवं जन्नत जैसा माहौल हो जाएगा, खुशियों भरा माहौल हो जाएगा तथा सब अपने-अपने दुख दूर कर पाऐंगे एवं दूसरो को व अपने को खुश रख पाऐंगे एवं अपने को खुश रख पाऐंगे एंव अपने को प्रशंसनीय बना पाऐंगे एवं भगवान भी उनकी प्रशंसा करने लग जाऐंगे।

परिवार एक अच्छा परिवार कैसा होता है एक ऐसा परिवार वह होता है जहाँ सब लोग मिलजुलकर रहते हैं प्यार से रहतें है तथा एक दूसरे के काम आते हैं जहाँ आपस में क्लेश नहीं होता अर्थात लोग अगर ऐसा करने लगें कि आपसी प्रेम तो ज्यादा से ज्यादा बढ़ जाऐ एवं आपसी क्लेश कम से कम हो जाऐं तो परिवार 'आदर्श परिवार' की तरफ बढ़ता चला जाएगा।

अब अगर परिवार का हर सदस्य इस कोशिश मे लग जाए या ऐसे काम या व्यवहार ज्यादा से ज्यादा करने लग जाए जिससे आपस मे मेलजोल एवं प्रेम बढ़ता है या जेसे ही मौका लगता है ऐसा करने लग जाता है या अगर कोई दूसरा सदस्य जब भी ऐसा कोई काम करता है उसमें वह सहयोग करने लगता है तो परिवार आपसी प्रेम की तरफ बढ़ता चला जाएगा।

दूसरी तरफ ऐसे काम या ऐसे व्यवहार जिनसे आपस मे क्लेश बढ़ता है ऐसे काम या व्यवहारों को हर परिवार का सदस्य नहीं करता है या जैसे ही मौका लगता है इन्हें करना बन्द कर देता है या अगर कोई दूसरा सदस्य ऐसा कोई काम या व्यवहार कर रहा है तो उसमें सहयोग नहीं करता है या बहस करके उसको बढ़ाता नहीं है तो परिवारिक क्लेश धीमे-धीमे खत्म हो ही जायेगा।

सब्र रखें हर कोई परिवारिक प्रेम बढ़ाने में सहयोग करे एवं क्लेश बढ़ाने में सहयोग न करे तो धीमे-धीमे खुद ही परिवार आदर्श परिवार बन जाएगा।

बस करना है कि अच्छी बात तो ज्यादा से ज्यादा करनी या जैसे ही मौका लगे शुरु कर देनी है एवं दूसरी तरफ बुरी बात नहीं करनी है एवं जैसे ही मौका लगे उसे करना छोड़ देना है बस ऐसे ही धीरे-धीरे सब कुछ बढ़िया एवं सिर्फ प्यारा सा हो जाएगा। एवं यह परिवार खुशहाल एवं खुशियों भरा हो जाएगा।

यह बिल्कुल नहीं देखना है कि अच्छी बातें मैं ही क्यों करुं दूसरा तो करता ही नहीं है। हमें दूसरे से तो कुछ लेना ही नहीं है हमें अपना फर्ज करते रहना है बिना इस बात को देखे कि दूसरे अपना फर्ज कर रहे हैं या नहीं अब अगर दूसरे अपना फर्ज पूरा नहीं कर रहे तो इसका ये मतलब तो नहीं कि हमें अपने फर्ज से बचने का अधिकार मिल गया नहीं भाई ऐसा नहीं है हमारा फर्ज तो ऐसे ही रहेगा तथा किसी भी हाल में नहीं बदलेगा। अगर हम अपना फर्ज पूरा करेंगे परिवार तो आपका तभी एहसान मानेगा वरना आप में एवं औरों में क्या फर्क है।

यहीं पर बड़ा भारी महत्व है मन का। हम शायद अपने परिवार के लिए यह योगदान तो कर ही सकते हैं एवं करना ही चाहिए कि अपने मन में कभी भी दुश्मनी न पालें अपने परिवार के किसी भी सदस्य के प्रति कभी भी दुश्मनी न पालें। मन में दुश्मनी पालना एक ऐसी आग है जो सब कुछ जला देती है बस आज नहीं पर धीमे-धीमे सब कुछ जला देती है हमको खुद को एवं हमारे सारे परिवार को धीरे-धीरे जला देती है। कोई कैसा भी हो चाहे अच्छा हो चाहे बुरा बस दुसरे के बुरेपन का, उसमें अच्छापन लाने का पूरा प्रयास करें हर समय, हमेशा प्रयास करें, हर सम्भव प्रयास करें मगर बस मन में दुश्मनी न पालें। अगर आपने ऐसा कर लिया तो आपका जीवन धन्य हो जाऐगा आपका परिवार धन्य हो जाऐगा एवं आपका परिवार व आप

होने वाले नुकसानो से बच जाएगा एवं सामान्य तौर पर सिर्फ प्रगति के मार्ग पर कायम रहेगा एवं इस प्रगति के मार्ग मे अवरोध उत्पन्न नहीं होंगे।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

भजमन नारायण नारायण हरि हरि।
हरि हरि हरि हरि हरि हरि बोलो हरि हरि।।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

मन में होता है मन्थन, मन में होता है मन्थन।
मन में जो होता है मथ जाता है, हो जाता है मन्थन।।
मन में होता है मन्थन ... ...
असुर भी रहते हैं मन में, मन में हो जाता है मन्थन,
देवता भी रहते हैं मन में, मन में हो जाता है मन्थन,
विष भी आ जाता है आ जाता है अमृत भी
आ जाते हैं हीरे-मोती आ जाता है जीवन।।
मन में होता है मन्थन ... ...
यही है स्वर्ग यही है नरक बस पहचाना जाता है मन्थन।
ये मन ही तो सागर है सागर की लहरे हैं ये मन।
मन जब आपस मे टकराता तो हो जाता है मन्थन।।
मन में होता है मन्थन ... ...
प्रकट यहीं पर सब होता है सब हो जाता है मन्थन।
देव यहीं पर रहते हैं रहते हैं असुर यहीं पर।
देव असुर संग्राम यहीं हैं जब, जब होता है मन्थन।।
मन में होता है मन्थन ... ...
राम अगर मन में रमते हैं तो अमृत बन जाता।
गर रावण बस जाता है तो आ जाता है रावणपन।

रावणपन जब मथता है मथ जाता है रावणपन।
विष यहां भर जाता है नफरत का पेड़ उगाता है।
नरक यहीं बन जाता है हो जाता है जब मन्थन।।
मन में होता है मन्थन ... ...

राम अगर रमते हैं मन में मथ जाता है रामपन।
रामपन जब मथता है मथ जाता है रामपन।
रामपन जब मथता है तो आ जाता है अमृत।।

बन जाता है स्वर्ग यहाँ पर, अमर हो जाता है जीवन।
जीवन सच्चा सुखमय हो जाता सच्चा हो जाता है तनमन।
सच्चा हो जाता है तनमन जब राम का होता मन्थन।
मन में होता है मन्थन ... ...
हे राम रमा जाओ तुम मन में ताकि हो जाए मन्थन।
मन्थन हो हित करने वाला तो विश्व भला यहाँ हो जाए।
विश्व भरा हो अमृत से जहर यहां न आ पाऐ।
नफरत न हो यहाँ कहीं भी, प्रेम यहां पर भर जाए।
हे राम हमारे ऐसा कर दो तुम मन का मन्थन।।
मन में होता है मन्थन ... ...
मन में होता है मन्थन मन में जो भी होता है,
मथ जाता है हो जाता है मन्थन
मन में होता है मन्थन ... ...

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
दर्शन दो घनश्याम श्याम, मोरी अंखिया प्यासी रे।
मोरी अंखिया प्यासी रे दर्शन दो घन श्याम।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रामराज्य आह्वाहन मिशन

काश! हम सब भी श्रीराम जैसे अच्छे स्वामी, श्रीराम जैसे अच्छे कर्मचारी, श्रीराम जैसे अच्छे मैनेजर, श्रीराम जैसी अच्छी प्रजा होते तो इस दुनिया का तो सुखी होना, आनन्द से भरपूर होना तय था।

"आओ रामपन सीखे एवं राम जैसे हो जाऐं"

www.ramrajyaahwahan.com

हमारे दोस्त बने एवं धरती पर रामराज्य लाने का चैलेंज स्वीकार करें

बस अगर आप हमारे दोस्त बनना चाहते हैं तो आपको किन्हीं 3 घरों/व्यापारों में 'रामराज्य' बनाने का लक्ष्य साधना होगा तथा उसमें हम भी आपका साथ देंगे। इसके लिए आपने निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना है।

- आप बस सिर्फ काम बनाऐं, कभी भी कोई काम बिगाड़ें नहीं, न अपना, न किसी और का।
- आप सिर्फ समझाऐं, सिर्फ समझाऐं मगर जबरदस्ती न करें, दूसरे के समझने का इन्तजार करें सब्र रखें।
- आप सिर्फ प्रेमपूर्ण (सौहार्द्रतापूर्ण) वातावरण बनाऐ, कभी क्लेशपूर्ण नहीं, कभी नहीं।
- आप सभी से करुणापूर्ण, दयापूर्ण, सहयोगी भाव रखें।
- दूसरे ने जो किया, जैसे किया क्यों किया उसकी ऐसा करने की मजबूरी समझें, कभी उससे नफरत या गुस्सा ना करें।
- आप अपने काम बनाते समय ध्यान रखें किसी और का काम न बिगड़ जाऐ, काम सभी के बनने ही चाहिऐं, समन्वय बैठाऐं।
- बस ऐसा करें, एवं करते ही रहें, एक दिन सब अच्छा हो जाएगा, अभ्यास करते रहें, करते रहें, अभ्यास से आप इस कला में पारंगत हो जाऐंगे।

  अभ्यास से अर्जुन ने ऐसा तीर चलाना सीख लिया था जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, आप भी यह सब सीख जाऐंगे।

  यही तो 'राम' हैं, यही तो रामराज्य है।

जय श्रीराम